उत्तराखण्ड के निवासियों के पर्यावरण नैतिकता एवं पर्यावरण अभिवृत्ति पर पर्यावरणीय जागरूकता का प्रभाव

[1]वन्दना तिवारी,
शोध छात्रा
हिमगिरी जी यूनिवर्सिटी
देहरादून।

शब्दकुंजी:

उत्तराखण्ड राज्य, पर्यावरण जागरूकता, पर्यावरण अभिवृत्ति, पर्यावरण नैतिकता, पर्यावरण संरक्षण।

सारांश:

प्रस्तुत शोध पत्र उत्तराखण्ड के निवासियों के पर्यावरण नैतिकता एवं पर्यावरण अभिवृत्ति पर पर्यावरण जागरूकता का प्रभाव के अध्ययन पर आधारित है। वर्तमान समय में देश तथा राज्य के पर्यावरण के सभी प्रमुख संसाधन अपूर्णीय क्षति के गम्भीर खतरे में है। वर्तमान समय में वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, भूमि क्षरण के रेडियोधर्मी प्रदूषण, वैश्विक तापमान में वृद्धि जैसी समस्यायें दिनोदिन बढती जा रही है तथा समाज का इन समस्याओं के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण है। मानव विकास की अंधी दौड़ में शामिल हो कर जीवन के उद्देश्यों से भटक गया है, तथा अपने लालच और सुख सुविधाओं की पूर्ति में व्यस्त हो कर पर्यावरण को क्षति पहुंचाने में लगा है और पर्यावरण के प्रति अपने दायित्वों से विमुख हो गया है। पर्यावरण नैतिकता से तात्पर्य प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के प्रति हमारी सजगता और जिम्मेदारी से है तथा पर्यावरण अभिवृत्ति से अभिप्राय पर्यावरण के प्रति सचेतना, विचारशीलता, मजबूत भावनाए एवं पर्यावरणीयह्रास को रोकने हेतु सक्रिय रूप से भागीदारी करने से है ताकि व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को समझ सके तथा प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करते हुए उनको भावी पीढियों के लिये बचाया जा सके।

प्रस्तावना:

पर्यावरण से अभिप्राय परिवेश से होता है। पर्यावरण से सम्बन्धित अनेकों प्रसंग तथा व्याख्यायें हमारे वेदों उपनिषदों तथा पुराणों में भरे पड़े है। वैदिक काल में वन रक्षा, वृक्ष रक्षा आदि को मानव कर्तव्यों में सम्मिलित किया गया है।

वैदिक काल में प्रकृति को वन्दनीय मानकर आघात पहुंचाना धर्म विरोधी माना जाता था, यही भावना पर्यावरण संतुलन को दृढता प्रदान करती है, उन्हीं मंत्रों से स्पष्ट है, उस समय पर्यावरण की रक्षा करना व्यक्ति का धर्म माना जाता था और मनुष्य प्रकृति के सुरम्य वातारण में कुदरती तरीके से निवास करता था। हम विश्व स्तर पर देखते है कि प्रकृति का पोषण किये बिना प्रकृति का दोहन नहीं करते हैं, ऐसा करने से हम प्रकृति के नाजुक संतुलन को हानि पहुंचातें है।

[1] Author

दस कृपा समा वापी दश वापी समोहुयः

दस हुदः समः पुत्रः दश पुत्रो समोदुमः

अर्थात दस कुएं बनाना एक तालाब के समान है, दस तालाब बनाना एक झील के समान है व दस पुत्र एक पेड़ के बराबर है, अतः एक पेड़ लगाने से वही लाभ है जो दस पुत्र से मिलता है।

''माता भूमि पुत्रोहम पृथिव्याः''

अर्थवेद

अर्थात पृथ्वी का आदर व सुरक्षा माता के रुप में समझ कर किया जाना चाहिए, पर्यावरण के संतुलन को मौलिक चिंतन भी समझा गया था।

प्राचीन काल में प्रकृति में कोई असंतुलन नहीं था, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण तत्वों को देवता मानकर उनकी पूजा करता था। प्रत्येक का तनमन तथा धन से रक्षा करना नैतिक तथा धार्मिक कर्तव्य था। जल, वायु, सूर्य, पृथ्वी, अकाश विभिन्न वनीय वृक्षों को देव तुल्य स्थान प्राप्त था। गोस्वामी तुलसीदास जी ने पांच तत्वों के बारे में लिखा है कि ''क्षति, जल, पावक, गगन, समीरा'' इन पांच तत्वों से सृष्टि का निर्माण होता है। इसे ही पर्यावरण वैज्ञानिकों ने परिस्थिकी नाम दिया। तीव्र औद्योगीकरण एवं कृषि विकास से मनुष्य का ध्यान आर्थिक विकासोन्मुख कर दिया है। जिसके प्रभाव स्वरूप पर्यावरण प्रदूषण तथा अधोगति जैसे विसाक्तीकरण, अम्लीकरण, मरुस्थलीकरण, वैश्विक तापमान में वृद्धि, वायुमंडल तथा ओजोन परत के ह्रास इत्यादि समस्याओं ने विकराल रुप धारण कर लिया है,एवं इस बात पर विशेष बल दिया जा रहा है कि पर्यावरण की गुणवत्ता के द्वारा जीवन की गुणवत्ता का किस प्रकार से ह्रास हो रहा है को किस प्रकार से बचाया जा सके। पर्यावरण की समस्यायें किसी विशिष्ट क्षेत्र, राष्ट्र अथवा महाद्वीप तक ही सीमित नहीं रह गई है। अपितु वैश्विक मुद्दा बन गई है।

पर्यावरण जागरूकता समस्याओं को हल करने के लिये वांछित प्रवृत्तियों आदर्शों एवं आवश्यकता कौशलों के विकास का मार्ग प्रसस्त करती हैं, अर्थपूर्ण सहभागिता तथा उससे जुड़े विषयों एवं उनके कुप्रभावों का ज्ञान होना आवश्यक है। कोई भी सरकार मात्र स्वयं के प्रयासों द्वारा पर्यावरण संरक्षण का लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकती जब तक सामान्य जनमानस में पर्यावरणीय आदर्शों एवं प्रवृत्तियों का समुचित विकास न किया जाये।

अतः यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि इन विषयों पर जनमानस की जागरूकता का स्तर ज्ञात हो, यदि जनता का अवबोधन एवं ज्ञान पर्यावरण के विषय में अधिक होगा तो इसका अर्थ है कि उनका पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर उच्च होगा। पर्यावरणीय जागरूकता की वृद्धि होने पर व्यवहार अथवा क्रिया में परिवर्तन दृष्यमान होगा।

पर्यावरण नैतिकता एवं अभिवृत्ति पर्यावरणीय ह्रास के खिलाफ लड़ाई के अपरिहार्य अस्त्र के समान है। अतः यह महत्पूर्ण है कि जनता में पर्यावरणीय अभिवृत्ति को अधोमुखी करने हेतु उनके पर्यावरणीय नैतिकता का विकास किया जाये। इस प्रकार अन्ततः सम्पूर्ण समाज ही पर्यावरण संरक्षण में सहभागी हो जायेगा।

शब्दों का स्पष्टीकरण :

राज्य के निवासीः

यह शोध उत्तराखण्ड राज्य के तीनों जनपदों के निवासियों टिहरी, चमोली, देहरादून तक ही सीमित है। यह शोध विभिन्न विभाग में कार्यरत, शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले महिला, पुरुष के ऊपर किया गया है।

पर्यावरणीयः शोध में प्रयुक्त पर्यावरण से शोधार्थी का आशय पर्यावरण की वैज्ञानिक अवधारणा से ही है। अर्था पर्यावरणीय शब्द का आशय हमारे चारों ओर के वातावरण और उसके प्रमुख घटकों से है।

अभिवृत्तिः अभिवृत्ति से अभिप्राय पर्यावरण के प्रति सचेतना विचारशीलता मजबूत भावनाएं तथा विचार एवं पर्यावरणीय ह्यस को रोकने हेतु सक्रिय रूप से भागीदारी से है।

नैतिकताः नैतिकता का संदर्भ पर्यावरण पर अपने उपभोग के कारण पड़ने वाले प्रभावों को समझना तथा पृथ्वी एवं प्राकृतिक संसाधनों को भविष्य की पीढियों के लिये सुरक्षित रखने की अपनी व्यक्तिगत एवं सामाजिक जिम्मेदारी को समझने से है।

जागरूकताः जागरूकता से अभिप्राय पर्यावरण एवं उससे जुड़ी समस्याओं जैसे प्रदूषण, जनसंख्या विष्फोट, जंगलों का विनाश, परिस्थिकी व्यवधान ऊर्जा संकट आदि के प्रभावों के कुप्रभावों के समझने से हैं।

शोध की आवश्यकता एवं महत्वः

मानव सिर्फ अपने जीवन यापन हेतु प्राकृतिक वातावरण पर आश्रित है। अपितु पर्यावरण उसके जीवन के हर पक्ष को प्रभावित करता है। पर्यावरणह्यस वैश्विक स्तर पर आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति को अधिकांशतः एक तरफ तो लापरवाही का दुष्प्रभाव माना जाता है तथा दूसरी तरफ इसका व्यक्तिगत या सामूहिक क्रियाओं का प्रभाव माना जाता है। जिसमें आर्थिक लाभ को सर्वोच्च वरीयता दी जाती है। बड़े शहरों तथा ऊंची इमारतों के बढ़ते चलन तथा सड़कों की चौड़ाई तथा खुले पार्किंग स्थलों के अनदेखी से अधिक अति प्रजनन तथ पर्यावरण को नुकसान में वृद्धि से आर्थिक प्रगति की गति के मुकाबले कहीं अधिक पर्यावरण का ह्यस हो रहा है। सही अर्थ एवं बुनियादी संरचनात्मक प्रगति की दौड़ में पर्यावरण को उचित महत्व नहीं दिया गया है, बल्कि कई बार पर्यावरण दरकिनार करने से उसके ह्यस में वृद्धि हुई है। नागरिक सामाजिक संगठनों की सहभागिता एवं जागरूकता पर्यावरणीय ह्यस से मुकाबला करने की पूर्व शर्त है। अतः इसके लिये अपने हरे–भरे ग्रह के लिये जनमानस को जगाने की आवश्यकता है।

उद्देश्यः वर्तमान अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उत्तराखण्ड की जनता को पर्यावरणीय जागरूकता के स्तर का उनके पर्यावरणीय नैतिकता एवं अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव को ज्ञात करना है। इस आशय के लिये वर्तमान अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं।

1. उत्तराखण्ड की जनता के पर्यावरणीय जागरूकता के स्तर का आंकलन करना।

परिकल्पनाएंः परिकल्पना को परिभाषित करते हुए लुण्डबर्ग के अनुसार परिकल्पना एक सम्भावित सामन्यीकरण होता है। जिसकी सत्यता की जांच अभी बाकी रहती है। अपनी प्रारम्भिक अवस्था में

परिकल्पना एक आत्म प्रकाशन, अनुमान, कल्पनात्मक विचार, अर्न्तदृष्टि कुछ भी हो सकती है। जो अनुसंधान कार्य का आधार बन जाती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थीनी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में कार्य में लगे महिला एवं पुरुषों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है।

बेकन के अनुसारः जैसे ही समस्या के अस्तित्व की खोज की जाती है, वैसे ही परिकल्पना का निर्माण हो जाना चाहिए।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत है।

1. उत्तराखण्ड राज्य के शिक्षण तथा गैर शिक्षण कार्य में लगे व्यक्तियों की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन का परिसीमांकनः प्रस्तुत शोध का अध्ययन भौगोलीय रूप से उत्तराखण्ड राज्य के टिहरी, चमोली, देहरादून जिले के परिसीमा तक परिसीमित किया गया है। उक्त परिसीमन में उत्तराखण्ड राज्य के शहरी, ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले 300 शिक्षण कार्य तथा 300 गैर शिक्षण कार्य में लगे पुरुष एवं महिलाओं को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है।

शोधविधिः– शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन को विधिवत सम्पादन के लिये निम्न शोध विधि का चयन किया गया है।

1. **सर्वेक्षणात्मक विधिः** अनुसंधान की वह विधि जसके अन्तर्गत वर्तमान समय एवं स्थितियों में विद्यमान प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। सर्वेक्षण विधि कहलाती है। शैक्षणिक अनुसंधान में इस विधि का प्रयोग किया गया है।
   इस विधि में पूर्व निर्धारित प्रश्नों के माध्यम से प्रश्नावली साक्षात्कार एवं अनुसूची द्वारा जानकारी प्राप्त की जाती है। प्राप्त जानकारी या प्रदत्तों का संकलन करने के पश्चात वर्गीकरण सारणीयन प्रदत्तों से प्राप्त जानकारी की व्याख्या एवं मूल्यांकन किया जाता है।
2. **शोध उपकरणः–** प्रस्तुत शोध में शोधार्थिनी ने अपने न्यायदर्श को वांछित आंकड़ों के चयन हेतु पर्यावरण जागरूकता के लिए के. यशोदरा, एवं हसीन ताज की प्रश्नावली का प्रयोग किया है।

पूर्व अध्ययन की समीक्षाः– पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों का ज्ञानकोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढाने में सहायता मिलती है। इनमें मुख्य रूप से गुप्ता, ए.पी. तथा गुप्ता अल्का(2007)[3], पाठक, पी.डी. (2005–08)[4], श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्य (1987), बनर्जी शुभंकर (1996)[1], पठवा शुभू(1989)[2], ने पर्यावरण शोध से सम्बन्धित कार्य किये हैं।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्याः– शोधार्थिनी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य जिसकी सहायता से शोध निष्कर्षों की वैद्यता तथा विश्वसनीयता का पता चलता है। जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय।

अतः परिणाम प्राप्त करने के लिये आवश्यक है शोध में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय।

परिकल्पना–1: उत्तराखण्ड राज्य के शिक्षण तथा गैर शिक्षण कार्य में लगे व्यक्तियों की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी– क्रमांक 1

उत्तराखण्ड राज्य के शिक्षण तथा गैर शिक्षण कार्यों में लगे व्यक्तियों की पर्यावरण जागरूकता में तुलना

क्र.सं.	विषय	न्यायदर्श	औसतमान	मानक विचलन	सहसम्बन्ध	t का मान	परिणाम
1.	शिक्षण कार्य में लगे व्यक्तियों की पर्यावरण जागरूकता	300	22.37	1.89	0.935	2.118	.05 स्तर पर सार्थक
2	गैर शिक्षण कार्य में लगे लोगों की पर्यावरण जागरूकता	300	21.97	2.14			

Df=598 के लि. .85 विश्वसनीयता स्तर पर t=1.96 के सांख्यिकीय विश्लेषण

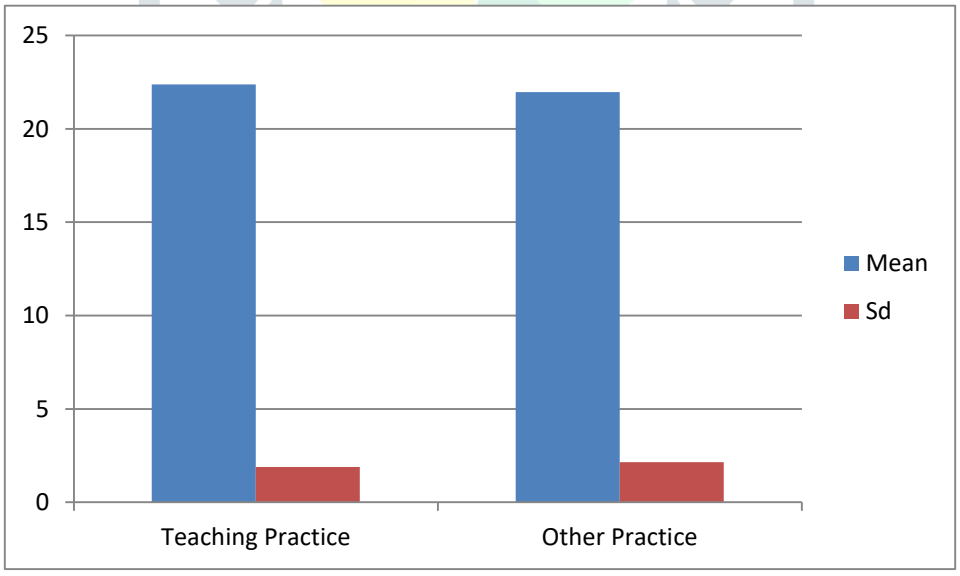

विश्लेषण :– उपर्युक्त सारणी क्रमांक 1 के सांख्यिकीय विश्लेषण से पता चलता है कि उत्तराखण्ड राज्य में शिक्षण कार्य मे लगे व्यक्तियों की पर्यावरण जागरूकता का औसतमान 22.37 व मानक विचलन 1.89 तथा गैर शिक्षण कार्य में लगे व्यक्तियों का औसतमान 21.97 एवं मानक 2.14 है। जो यह दर्शाता है कि गैर शिक्षण कार्य की अपेक्षा शिक्षण कार्य मे लगे व्यक्तियों की पर्यावरण जागरूकता अधिक ($M_1 > M_2$) पायी गयी है।

इन दोनो कार्यों में लगे व्यक्तियों की पर्यावरण जागरूकता में अंतर t मान के पदों में 2.118 पाया गया हे जो क .05 विश्वसनीयता स्तर पर सार्थक है। अर्थात 95 प्रतिशत से अधिक शिक्षण कार्य में लगे व्यक्तियों की गैर शिक्षण कार्यों में लगे व्यक्तियों की पर्यावरण जागरूकता अधिक विद्यमान है। सम्भवतः इसके पीछे यह कारण हो सकता है कि शिक्षण कार्य में लगे व्यक्ति अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा पर्यावरण सम्बन्धी परिचर्चा करते रहते हैं। गोष्ठियों में जाते रहते हैं, दूरदर्शन पर इससे सम्बन्धित समाचार देखते हैं व सुनते हैं। साथ ही विद्यालयों में भी इससे सम्बन्धित कार्य होते रहते है, जिससे उनकी पर्यावरण जागरूकता बढ रही है।

निष्कर्षः– प्रस्तुत शोध अध्ययन उत्तराखण्ड राज्य के निवासियों के पर्यावरणीय नैतिकता एवं पर्यावरणीय अभिवृत्ति पर पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन किया गया है। ईश्वर की समस्त रचना का अपना महत्व तथा कार्य है, पर्यावरण सभी जीवित प्राणियों जैसे मानव, पशु, पेड़ पौधों के लिये एक घर है, इसलिये प्रकृति तथा उसके अस्तित्व और मानव जीवन के महत्व को जानना और उसकी सराहना करना आवश्यक है। पर्यावरण बचाने की काफी हद तक जिम्मेदारी हमारे कंधों पर है और यह तभी सम्भव है जब वे अपनी जीवनशैली के छोटे–छोटे बदलाव को और पर्यावरण संरक्षण को एक चुनौती के रुप में स्वीकार करें। इस शोध से यह पता चलता है कि पर्यावरण संरक्षण केवल एक व्यक्ति की जिम्मेदारी न हो कर सामाजिक दायित्व है, भले ही उत्तराखण्ड राज्य के निवासियों ने पर्यावरण जागरूकता, अभिवृत्ति तथा नैतिकता है। लेकिन शिक्षा के आधार पर पर्यावरण जागरूकता का स्तर कम ही है। यह इस तथ्य के कारण हो सकता है कि हमारे यहां शिक्षा में पर्यावरण शिक्षा और प्राकृतिक संरक्षण के कियाकलापों को बहुत महत्व नहीं दिया जाता है। सरकारी स्तर पर भले ही पर्यावरण शिक्षा से सम्बन्धित प्रतिनिधियों को मजबूत करने के लिये बड़ी मात्रा में प्रयास किये जा रहे हैं।

अतः हमें पर्यावरण नैतिकता एवं पर्यावरण जागरूकता में वृद्धि के लिये लोगों को प्राकृतिक संसाधनों के न्यायपूर्ण उपयोग के प्रति सजग करना होगा।

संदर्भः–

1. गुप्ता, एस.पी. तथा गुप्ता अल्का सांख्यिकीय विधियां इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन 2007।

2. बनर्जी शुभंकर पर्यावरण की रक्षा के लिए जन आन्दोलन आवश्यक कुरुक्षेत्र, 1996, 14–17

3. पठवा शुभू पर्यावरण एवं संस्कृति, बीकानेर (भारत) वाग्देवी प्रकाशन, 1989, पृष्ठ 124

4. पाठक, पी.डी. शिक्षा मनोविज्ञान विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 2005, 2(08); 78–80